नाम - डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसोसियेट प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम
विषय - राजनीति शास्त्र विभाग
कक्षा - बी.ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट-01; सत्र - 2019-20
पेपर - 01
दिनांक - 24.07.2020

टॉपिक - फेबीयनवाद और इसके स्रोत -

फेबीयनवाद शनैः शनैः सुधारवादी प्रवृति से युक्त समाजवाद का एक रूप है। यह लंदन के कतिपय प्रतिभाशाली नवयुवकों द्वारा 4 जनवरी, 1884 ई. में फेबीयन सोसायटी' की स्थापना से शुरू की गई जिसका उद्देश्य सब लोगों के कल्याण और सुख को ध्यान में रखते हुये समाज का पुनर्निर्माण करना था। फेबीयन सोसायटी द्वारा प्रचारित किये जाने वाले सिद्धांतों को ही फेबीयनवाद का नाम दिया जाता है। इसका नामकरण रोम के प्रसिद्ध प्राचीन सेनापति क्विण्टस फेबियस मैक्सिमस द्वारा अपनायी गई मंदगामी श्रमन युद्ध रणनीति के आधार पर किया गया था। यह सोसायटी भी समाज की स्थिति में धीरे-धीरे सुधार करने की इच्छुक थी, अतः इसके द्वारा अपना नाम फेबीयन सोसायटी के नाम पर रखा गया और इसने समाज में धीरे-धीरे सुधार कर समाजवाद लाने पर बल दिया।

फेबीयन सोसायटी की स्थापना में भाग लेने वाले प्रमुख व्यक्तियों में सिडनी और बीट्रिस वेब, जी.बी. शॉ, प्रो. ग्राहम वालास, रैम्जे मैकडोनाल्ड, जी.डी.एच. कोल आदि प्रमुख थे। ये सभी बुद्धिजीवी और मध्यम वर्ग के थे। इस कारण फेबीयनवाद को बौद्धिक मध्यमवर्गीय विचारधारा और आंदोलन कहा जाता है।

फेबीयनवाद के स्रोत - फेबीयनवाद पर 19वीं सदी के समाज-सुधारकों तथा विचारकों विशेषकर कार्ल मार्क्स, ओवन, मिल, रिकार्डो, लेस्ली तथा के का प्रभाव पड़ा।

फेबियनवादियों ने मार्क्स के इस सिद्धांत को स्वीकार किया कि सामाजिक कल्याण के लिये उत्पादन के साधनों पर सामूहिक स्वामित्व आवश्यक है किंतु उसके आर्थिक सिद्धांतों - अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत और वर्ग-संघर्ष को ठुकरा दिया। उसके स्थान पर उन्होंने अंग्रेज अर्थशास्त्रियों के 'सीमांत उपयोगिता सिद्धांत' तथा रिकार्डो के लगान सिद्धांत को अपनाया। मार्क्स की भाँति फेबियनवादियों ने अपनी विचारधारा को आर्थिक और ऐतिहासिक आधारों पर रखा। बर्नार्ड शॉ ने आर्थिक आधार और सिडनी वैब ने ऐतिहासिक आधार की चर्चा की। उन्होंने इतिहास को शोषक और शोषित वर्ग का संघर्ष नहीं माना वरन् इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि पिछले लगभग 100 वर्षों में यूरोप में सामाजिक जीवन का जो विकास हो रहा है उसकी दिशा अनवरत रूप से लोकतंत्रवाद की ओर है और समाजवाद भी लोकतंत्रीय आदर्श का एक पहलू है। औद्योगिक क्रांति ने समाजवाद को अपरिहार्य बना दिया है और समाजवाद बहुत दिनों से चली आती हुई विकासवादी प्रक्रिया का अंतिम बिंदु होगा। (शेष)